

भगत नामदेव – सबद ५०
साहिबु संकटवै सेवकु भजै ॥
रागु बसंतु, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११९५

साहिबु संकटवै सेवकु भजै ॥
चिरंकाल न जीवै दोऊ कुल लजै ॥ १ ॥
तेरी भगति न छोडउ भावै लोगु हसै ॥
चरन कमल मेरे हीअरे बसैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जैसे अपने धनहि प्रानी मरनु माँडै ॥
तैसे संत जनाँ राम नामु न छाडैं ॥ २ ॥
गंगा गइआ गोदावरी संसार के कामा ॥
नाराइणु सुप्रसंन होइ त सेवकु नामा ॥ ३ ॥ १ ॥

सार: जो अंतरात्मा डर, लालच या स्वीकृति पाने के दबाव में आकर अपने मूल्यों को छोड़ देती है, वह अपनी शक्ति की नींव ही खो देती है। सत्यनिष्ठा की वास्तविक पहचान आराम के पलों में नहीं, बल्कि बाहरी चुनौतियों के बावजूद अडिग रहने में झलकती है। सिद्धांतों से समझौता करने पर भले ही कुछ समय के लिए फ़ायदा हो लेकिन इससे आत्म-सम्मान कमज़ोर होता है और भरोसा टूटता है। ऐसा जीवन सम्मान के साथ नहीं चल सकता क्योंकि यह न केवल मनुष्य के अपने भीतरी सच के साथ धोखा है बल्कि उन साँझा मूल्यों के साथ भी धोखा है जो हमारी सामूहिक मानवता को बनाए रखते हैं। वास्तविक सम्मान तब है जब दुनिया कुछ और चाहे, तब भी व्यक्ति धर्म और सत्य के मार्ग पर अडिग रहे।

साहिबु संकटवै सेवकु भजै ॥
अगर मालिक मुश्किल में हो और नौकर भाग जाए तो यह उस अंतर-आत्मा को दिखाता है जो बाहरी दबाव पड़ने पर अपने मुख्य मूल्यों और सत्यनिष्ठा को छोड़ देता है।

चिरंकाल न जीवै दोऊ कुल लजै ॥ १ ॥

ऐसी सोच अधिक समय तक नहीं टिकती, यह सत्यनिष्ठा की परंपरा और मानवता, दोनों ही परिवारों या परंपराओं को बदनाम करती है। यह दर्शाता है कि अपनी आंतरिक सच्चाई या ईमानदारी से बेईमानी करने पर इंसान अपनी गरिमा खो देता है और समाज में भी उसकी प्रतिष्ठा कम हो जाती है। (१)

तेरी भगति न छोडउ भावै लोगु हसै ॥

भले ही दुनिया मज़ाक उड़ाए, मैं अपनी उस भावना को नहीं छोड़ूंगा जो सबको सामान्य मानती है। यह पारंपरिक समाज की आलोचना के बावजूद एकता पर ध्यान बनाए रखने के पक्षे इरादे को दिखाता है।

चरन कमल मेरे हीअरे बसैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥

मेरे दिल में विनम्रता का वास हो। यह अच्छे गुणों की सच्ची खोज को दर्शाता है। (१)(विराम)

जैसे अपने धनहि प्रानी मरनु माँडै ॥

जैसे कोई व्यक्ति अपनी दौलत की रक्षा के लिए जान देने को भी तैयार रहता है। यह उस मज़बूत इरादे को दर्शाता है जो आध्यात्मिक रूप से मूल्यवान चीज़ों की रक्षा के लिए आवश्यक है।

तैसे संत जनाँ राम नामु न छाडैं ॥ २ ॥

इसी तरह, भक्त सर्वव्यापी ज्ञान पर चिंतन करना नहीं छोड़ते। इसका अर्थ है कि एकत्व का बोध ही एकमात्र सच्ची संपत्ति है जिसकी रक्षा अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर भी की जानी चाहिए। (२)

गंगा गइआ गोदावरी संसार के कामा ॥

गंगा, गया और गोदावरी की यात्रा करना केवल सांसारिक कार्य है। यह बातें दर्शाती हैं कि बाहरी दिखावे और रीति-रिवाज समाज को प्रभावित तो कर सकते हैं लेकिन वह आंतरिक भक्ति और ईमानदारी का स्थान नहीं ले सकते।

नारायण सुप्रसन्न होइ त सेवक नामा ॥३॥१॥

जब नारायण, जो सार्वभौमिक चेतना का प्रतीक हैं, आध्यात्मिक आनंद प्रदान करते हैं तब नामदेव उनके प्रति समर्पित हो जाते हैं। यह दर्शाता है कि भीतर की ग्रहणशीलता और कृपा जब विकसित होती है तब व्यक्ति अस्तित्व के मूल स्वरूप के साथ सहज सामंजस्य स्थापित कर लेता है। (३)(१)

तत्त्व: भगत नामदेव, भक्ति की उस सूक्ष्म परीक्षा पर जोर देते हैं जो हमारे दैनिक जीवन में होती है। हम बाहरी तौर-तरीके अपनाकर समाज को प्रभावित तो कर सकते हैं लेकिन वह सच्ची आंतरिक निष्ठा की जगह नहीं ले सकते। सच्ची भक्ति की ओर विकास तब शुरू होता है जब स्वयं के प्रति करुणा मन के प्रतिरोध को कम करके उसे ग्रहणशील बना देती है। खुलेपन की इस अवस्था में, सच्चाई के प्रति भक्ति किसी की स्वीकृति पाने के लिए नहीं की जाती, बल्कि वह स्वाभाविक रूप से भीतर से उपजती है। यही सामंजस्य वह एकमात्र सच्ची दौलत है जिसकी रक्षा, जान देकर भी की जानी चाहिए।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com